श्री हनुमान बाहुक

॥ छप्पय ॥

सिंधु-तरन, सिय-सोच-हरन, रबि-बालबरन-तनु ।

भुज बिसाल, मूरति कराल कालहुको काल जनु ॥

गहन-दहन-निरदहन-लंक निसंक, बंक-भुव ।

जातुधान-बलवान-मान-मद-दवन पवनसुव ॥

कह तुलसिदास सेवत सुलभ, सेवक हित संतत निकट ।

गुनगनत, नमत, सुमिरत, जपत, समन सकल-संकट-बिकट ॥ १ ॥

स्वर्न-सैल-संकास कोटि-रबि-तरुन-तेज-घन ।

उर बिसाल, भुजदंड चंड नख बज्र बज्रतन ॥

पिंग नयन, भृकुटी कराल रसना दसनानन ।

कपिस केस, करकस लंगूर, खल-दल बल भानन ॥

कह तुलसिदास बस जासु उर मारुतसुत मूरति बिकट ।

संताप पाप तेहि पुरुष पहिँ सपनेहुँ नहिँ आवत निकट ॥ २ ॥

॥ झूलना ॥

पंचमुख-छमुख-भृगुमुख्य भट-असुर-सुर,

सर्व-सरि-समर समरत्थ सूरो ।

बांकुरो बीर बिरुदैत बिरुदावली,

बेद बंदी बदत पैजपूरो ॥

जासु गुननाथ रघुनाथ कह, जासु बल,

बिपुल-जल-भरित जग-जलधि झूरो ।

दुवन-दल-दमनको कौन तुलसीस है

पवनको पूत रजपूत रूरो ॥ ३ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

भानुसोँ पढन हनुमान गये भानु मन -

अनुमानि सिसुकेलि कियो फेरफार सो ।

पाछिले पगनि गम गगन मगन-मन,

क्रमको न भ्रम, कपि बालक-बिहार सो ॥

कौतुक बिलोकि लोकपाल हरि हर बिधि,

लोचननि चकाचौंधी चित्तनि खभार सो ।

बल कैधौँ बीररस, धीरज कै, साहस कै,

तुलसी सरीर धरे सबनिको सार सो ॥ ४ ॥

भारतमेँ पारथके रथकेतु कपिराज,

गाज्यो सुनि कुरुराज दल हलबल भो ।

कह्यो द्रोन भीषम समीरसुत महाबीर,

बीर-रस-बारि-निधि जाको बल जल भो ॥

बानर सुभाय बालकेलि भूमि भानु लागि,

फलँग फलाँगहूँतें घाटि नभतल भो ।

नायि-नायि माथ जोरि-जोरि हाथ जोधा जोहैँ,

हनुमान देखे जगजीवनको फल भो ॥ ५ ॥

गोपद पयोधि करि होलिका ज्योँ लायी लंक,

निपट निसंक परपुर गलबल भो ।

द्रोन-सो पहार लियो ख्याल ही उखारि कर,

कंदुक-ज्योँ कपिखेल बेल कैसो फल भो ॥

संकटसमाज असमंजस भो रामराज,

काज जुग-पूगनिको करतल पल भो ।

साहसी समत्थ तुलसीको नाह जाकी बाँह,

लोकपाल पालनको फिर थिर थल भो ॥ ६ ॥

कमठकी पीठि जाके गोडनिकी गाडैँ मानो

नापके भाजन भरि जलनिधि-जल भो ।

जातुधान-दावन परावनको दुर्ग भयो,

महामीनबास तिमि तोमनिको थल भो ॥

कुंभकर्न-रावन-पयोदनाद-ईंधनको

तुलसी प्रताप जाको प्रबल अनल भो ।

भीषम कहत मेरे अनुमान हनुमान -

सारिखो त्रिकाल न त्रिलोक महाबल भो ॥ ७ ॥

दूत रामरायको, सपूत पूत पौनको, तू

अंजनीको नंदन प्रताप भूरि भानु सो ।

सीय-सोच-समन, दुरित-दोष-दमन,

सरन आये अवन, लखनप्रिय प्रान सो ॥

दसमुख दुसह दरिद्र दरिबेको भयो,

प्रकट तिलोक ओक तुलसी निधान सो ।

ज्ञान-गुनवान बलवान सेवा सावधान,

साहेब सुजान उर आनु हनुमान सो ॥ ८ ॥

दवन-दुवन-दल भुवन-बिदित बल,

बेद जस गावत बिबुध बंदीछोर को ।

पाप-ताप-तिमिर तुहिन-विघटन-पटु,

सेवक-सरोरुह सुखद भानु भोरको ॥

लोक-परलोकतेँ बिसोक सपने न सोक,

तुलसीके हिये है भरोसो एक ओरको ।

रामको दुलारो दास बामदेवको निवास,

नाम कलि-कामतरु केसरी-किसोरको ॥ ९ ॥

महाबल-सीम, महाभीम, महाबानयित,

महाबीर बिदित बरायो रघुबीरको ।

कुलिस-कठोरतनु जोरपरै रोर रन,

करुना-कलित मन धारमिक धीरको ॥

दुर्जनको कालसो कराल पाल सज्जनको,

सुमिरे हरनहार तुलसीकी पीरको ।

सीय-सुखदायक दुलारो रघुनायकको,

सेवक सहायक है साहसी समीरको ॥ १० ॥

रचिबेको बिधि जैसे, पालिबेको हरि, हर

मीच मारिबेको, ज्याइबेको सुधापान भो ।

धरिबेको धरनि, तरनि तम दलिबेको,

सोखिबे कृसानु, पोषिबेको हिम-भानु भो ॥

खल-दुख-दोषिबेको, जन-परितोषिबेको,

माँगिबो मलीनताको मोदक सुदान भो ।

आरतकी आरति निवारिबेको तिहुँ पुर,

तुलसीको साहेब हठीलो हनुमान भो ॥ ११ ॥

सेवक स्योकाई जानि जानकीस मानै कानि,

सानुकूल सूलपानि नवै नाथ नाँकको ।

देवी देव दानव दयावने ह्वै जोरैं हाथ,

बापुरे बराक कहा और राजा राँकको ॥

जागत सोवत बैठे बागत बिनोद मोद,

ताकै जो अनर्थ सो समर्थ एक आँकको ।

सब दिन रूरो परै पुरो जहाँ-तहाँ ताहि,

जाके है भरोसो हिये हनुमान हाँकको ॥ १२ ॥

सानुग सगौरि सानुकूल सूलपानि ताहि,

लोकपाल सकल लखन राम जानकी ।

लोक परलोकको बिसोक सो तिलोक ताहि,

तुलसी तमाइ कहा काहू बीर आनकी ॥

केसरीकिसोर बंदीछोरके नेवाजे सब,

कीरति बिमल कपि करुनानिधानकी ।

बालक-ज्यों पालहैं कृपालु मुनि सिद्ध ताको,

जाके हिये हुलसति हाँक हनुमानकी ॥ १३ ॥

करुना निधान, बलबुद्धिके निधान, मोद-

महिमानिधान, गुन-ज्ञानके निधान हौ ।

बामदेव-रूप, भूप रामके सनेही, नाम

लेत-दैत अर्थ धर्म काम निरबान हौ ॥

आपने प्रभाव, सीतानाथके सुभाव सील,

लोक-बेद-बिधिके बिदुष हनुमान हौ ।

मनकी, बचनकी, करमकी तिहुँ प्रकार,

तुलसी तिहारो तुम साहेब सुजान हौ ॥ १४ ॥

मनको अगम, तन सुगम किये कपीस,

काज महाराजके समाज साज साजे हैं ।

देव-बंदीछोर रनरोर केसरीकिसोर,

जुग-जुग जग तेरे बिरद बिरजे हैं ।

बीर बरजोर, घटि जोर तुलसीकी ओर

सुनि सकुचाने साधु, खलगन गाजे हैं ।

बिगरी सँवार अंजनीकुमार किजे मोहिं,

जैसे होत आये हनुमानके निवाजे हैं ॥ १५ ॥

॥ सवैया ॥

जानसिरोमनि हौ हनुमान सदा जनके मन बास तिहारो ।

ढारो बिगारो मैं काको कहा केहि कारन खीझत हौं तो तिहारो ॥

साहेब सेवक नाते ते हातो कियो सो तहाँ तुलसीको न चारो ।

दोष सुनाये तें आगेहुँको होशियार ह्वै हों मन तौ हिय हारो ॥ १६ ॥

तेरे थपे उथपै न महेस, थपै थिरको कपि जे घर घाले ।

तेरे निवाजे गरीबनिवाज बिराजत बैरिनके उर साले ।

संकट सोच सबै तुलसी लिये नाम फटै मकरीके-से जाले ।

बूढ भये, बलि, मेरिहि बार, कि हारि परे बहुतै नत पाले ॥ १७ ॥

सिंधु तरे, बडे बीर दले खल, जारे हैं लंकसे बंक मवा से ।

तैं रन-केहरि केहरिके बिदले अरि-कुंजर छैल छवा से ॥

तोसों समत्थ सुसाहेब सेइ सहै तुलसी दुख दोष दवासे ।

बानर बाज बढे खल-खेचर, लीजत क्यों न लपेटि लवा-से ॥ १८ ॥

अच्छ-बिमर्दन कानन-भानि दसानन आनन भा न निहारो ।

बारिदनाद अकंपन कुंभकरन्न-से कुंजर केहरि-बारो ॥

राम-प्रताप-हुतासन, कच्छ, बिपच्छ, समीर समीरदुलारो ।

पापतैं, सापतैं, ताप तिहुँतैं सदा तुलसी कहँ सो रखवारो ॥ १९ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

जानत जहान हनुमानको निवाज्यौ जन,

मन अनुमानि, बलि, बोल न बिसारिये ।

सेवा-जोग तुलसी कबहुँ कहा चूक परी,

साहेब सुभाव कपि साहिबी सँभारिये ॥

अपराधी जानि कीजै सासति सहस भांति,

मोदक मरै जो, ताहि माहुर न मारिये ।

साहसी समीरके दुलारे रघुबीरजूके,

बाँह पीर महाबीर बेगि ही निवारिये ॥ २० ॥

बालक बिलोकि, बलि, बारेतें आपनो कियो,

दीनबंधु दया कीन्हीं निरूपाधि न्यारिये ।

रावरो भरोसो तुलसीके, रावरोई बल,

आस रावरीयै, दास रावरो बिचारिये ॥

बडो बिकराल कलि, काको न बिहाल कियो,

माथे पगु बलीको, निहारि सो निवारिये ।

केसरीकिसोर, रनरोर, बरजोर बीर,

बाँहुपीर राहुमातु ज्यौं पछारि मारिये ॥ २१ ॥

उथपे थपनथिर थपे उथपनहार,

केसरीकुमार बल आपनो सँभारिये ।

रामके गुलामनिको कामतरु रामदूत,

मोसे दीन दुबरेको तकिया तिहारिये ॥

साहेब समर्थ तोसों तुलसीके माथे पर,

सोऊ अपराध बिनु बीर, बाँधि मारिये ।

पोखरी बिसाल बाँहु, बलि बारिचर पीर,

मकरी ज्यौं पकरिकै बदन बिदारिये ॥ २२ ॥

रामको सनेह, राम साहस लखन सिय,

रामकी भगति, सोच संकट निवारिये ।

मुद-मरकट रोग-बारिनिधि हेरि हारे,

जीव-जामवंतको भरोसो तेरो भारिये ॥

कूदिये कृपाल तुलसी सुप्रेम-पब्बयतें,

सुथल सुबेल भालु बैठिकै बिचारिये ।

महाबीर बाँकुरे बराकी बाँहपीर क्यों न,

लंकिनी ज्यों लातघात ही मरोरि मारिये ॥ २३ ॥

लोक-परलोकहुँ तिलोक न बिलोकियत,

तोसे समरथ चप चारिहुँ निहारिये ।

कर्म, काल, लोकपाल, अग-जग जीवजाल,

नाथ हाथ सब निज महिमा बिचारिये ॥

खास दास रावरो, निवास तेरो तासु उर,

तुलसी सो देव दुखी देखियत भारिये ।

बात तरुमूल बाँहुसूल कपिकच्छु-बेलि,

उपजी सकेलि कपिकेलि ही उखारिये ॥ २४ ॥

करम-कराल-कंस भूमिपालके भरोसे,

बकी बकभगिनी काहूतें कहा डरैगी ।

बडी बिकराल बालघातिनी न जात कहि,

बाँहुबल बालक छबीले छोटे छरैगी ॥

आई है बनाइ बेष आप ही बिचारि देख,

पाप जाय सबको गुनीके पाले परैगी ।

पूतना पिसाचिनी ज्यौं कपिकान्ह तुलसीकी,

बाँहपीर महाबीर, तेरे मारे मरैगी ॥ २५ ॥

भालकी कि कालकी कि रोषकी त्रिदोषकी है,

बेदन बिषम पाप-ताप छलछाँहकी ।

करमन कूटकी कि जंत्रमंत्र बूटकी,

पराहि जाहि पापिनी मलीन मनमाँहकी ॥

पैहहि सजाय नत कहत बजाय तोहि,

बावरी न होहि बानि जानि कपिनाँहकी ।

आन हनुमानकी दोहाई बलवानकी,

सपथ महाबीरकी जो रहै पीर बाँहकी ॥ २६ ॥

सिंहिका संहारि बल, सुरसा सुधारि छल,

लंकिनी पछारि मारि बाटिका उजारी है ।

लंक परजारि मकरी बिदारि बारबार,

जातुधान धारि धूरिधानी करि डारी है ॥

तोरि जमकातरि मदोदरि कढोरि आनी,

रावनकी रानी मेघनाद महँतारी है ।

भीर बाँहपीरकी निपट राखी महाबीर,

कौनके सकोच तुलसीके सोच भारी है ॥ २७ ॥

तेरो बालकेलि बीर सुनि सहमत धीर,

भूलत सरीरसुधि सक्र-रबि-राहुकी ।

तेरी बाँह बसत बिसोक लोकपाल सब,

तेरो नाम लेत रहै आरति न काहुकी ॥

साम दान भेद बिधि बेदहू लबेद सिधि,

हाथ कपिनाथहीके चोटी चोर साहुकी ।

आलस अनख परिहासकै सिखावन है,

एते दिन रही पीर तुलसीके बाहुकी ॥ २८ ॥

टूकनिको घर-घर डोलत कँगाल बोलि,

बाल ज्यों कृपाल नतपाल पालि पोसो है ।

कीन्ही है संभार सार अंजनीकुमार बीर,

आपनो बिसारिहैं न मेरेहू भरोसो है ॥

इतनो परेखो सब भांति समरथ आजु,

कपिराज साँची कहौं को तिलोक तोसो है ।

सासिति सहत दास कीजे पेखि परिहास,

चीरीको मरन खेल बालकनिको सो है ॥ २९ ॥

आपने ही पापतें त्रितापतें कि सापतें,

बढी है बाँहबेदन कही न सहि जाति है ।

औषध अनेक जंत्र-मंत्र-टोटकादि किये,

बादि भये देवता मनाये अधिकाति है ॥

करतार, भरतार, हरतार, कर्म, काल,

को है जगजाल जो न मानत इताती है ।

चेरो तेरो तुलसी तू मेरो कह्यो रामदूत,

ढील तेरी बीर मोहि पीरतें पिराति है ॥ ३० ॥

दूत रामरायको, सपूत पूत बायको,

समत्थ हाथ पायको सहाय असहायको ।

बाँकी बिरदावली बिदित बेद गाइयत,

रावन सो भट भयो मुठिकाके घायको ॥

एते बडे साहेब समर्थको निवाजो आज,

सीदत सुसेवक बचन मन कायको ।

थोरी बाँहपीरकी बडी गलानी तुलसीको,

कौन पाप कोप, लोप प्रगट प्रभायको ॥ ३१ ॥

देवी देव दनुज मनुज मुनि सिद्ध नाग,

छोटे बडे जीव जेते चेतन अचेत हैं ।

पूतना पिसाची जातुधानी जातुधान बाम,

रामदूतकी रजाइ माथे मानि लेत हैं ॥

घोर जंत्र मंत्र कूट कपट कुरोग जोग,

हनूमान आन सुनि छाडत निकेत हैं ।

क्रोध कीजे कर्मको प्रबोध कीजे तुलसीको,

सोध कीजे तिनको जो दोष दुख देत हैं ॥ ३२ ॥

तेरे बल बानर जिताये रन रावनसों,

तेरे घाले जातुधान भये घर-घरके ।

तेरे बल रामराज किये सब सुरकाज,

सकल समाज साज सजे रघुबरके ॥

तेरो गुनगान सुनि गीरबान पुलकत,

सजल बिलोचन बिरंचि हरि हरके ।

तुलसीके माथेपर हाथ फेरो कीसनाथ,

देखिये न दास दुखी तोसे कनिगरके ॥ ३३ ॥

पालो तेरे टूकको परेहू चूक मूकिये न,

कूर कौडी दूको हौं आपनी ओर हेरिये ।

भोरानाथ भोरेही सरोष होत थोरे दोष,

पोषि तोषि थापि आपनो न अवडेरिये ॥

अंबु तू हौं अंबुचर, अंब तू हौं डिंभ, सो न,

बूझिये बिलंब अवलंब मेरे तेरिये ।

बालक बिकाल जानि पाहि प्रेम पहिचानि,

तुलसीकी बाँह पर लामीलूम फेरिये ॥ ३४ ॥

घेरि लियो रोगनि कुजोगनि कुलोगनि ज्यौं,

बासर जलद घन घटा धुकि धाई है ।

बरसत बारि पीर जारिये जवासे जस,

रोष बिनु दोष, धूम-मूल मलिनाई है ॥

करुनानिधान हनुमान महाबलवान,

हेरि हँसि हाँकि फूँकि फौजें तैं उडायी है ।

खाये हुतो तुलसी कुरोग राढ राकसनि,

केसरीकिसोर राखे बीर बरिआई है ॥ ४४ ॥

॥ सवैया ॥

रामगुलाम तुही हनुमान

गोसाँयि सुसाँयि सदा अनुकूलो ।

पाल्यो हौं बाल ज्यों आखर दू

पितु मातु सों मंगल मोद समूलो ॥

बाँहकी बेदन बाँहपगार

पुकारत आरत आनंद भूलो ।

श्रीरघुबीर निवारिये पीर

रहौं दरबार परो लटि लूलो ॥ ३६ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

कालकी करलता करम कठिनाई कीधौं,

पापके प्रभावकी सुभाय बाय बावरे ।

बेदन कुभांति सो सहि न जाति राति दिन,

सोई बाँह गही जो गही समीरडावरे ॥

लायो तरु तुलसी तिहारो सो निहारि बारि,

सींचिये मलीन भो तयो है तिहुँ तावरे ।

भूतनिकी आपनी परायेकी कृपानिधान,

जानियत सबहीकी रीति राम रावरे ॥ ३७ ॥

पायँपीर पेटपीर बाँहपीर मुँहपीर,

जरजर सकल सरीर पीरमई है ।

देव भूत पितर करम खल काल ग्रह,

मोहिपर दवरि दमानक सी दई है ॥

हौं तो बिन मोलके बिकानो बलि बारेही तें,

ओट रामनामकी ललाट लिखि लई है ।

कुंभजके किंकर बिकल बूडे गोखुरनि,

हाय रामराय ऐसी हाल कहूँ भई है ॥ ३८ ॥

बाहुक-सुबाहु नीच लीचर-मरीच मिलि,

मुँहपीर-केतुजा कुरोग जातुधान है ।

राम नाम जपजाग कियो चहौं सानुराग,

काल कैसे दूत भूत कहा मेरे मान है ॥

सुमिरे सहाय रामलखन आखर दोऊ,

जिनके समूह साके जागत जहान है ।

तुलसी सँभारि ताडका-सँहारि भारी भट,

बेधे बरगदसे बनाइ बानवान है ॥ ३९ ॥

बालपने सूधे मन राम सनमुख भयो,

रामनाम लेत माँगि खात टूकटाक हौं ।

परयो लोकरीतिमें पुनीत प्रीति रामराय,

मोहबस बैठो तोरि तरकितराक हौं ।

खोटे-खोटे आचरन आचरत अपनायो,

अंजनीकुमार सोध्यो रामपानि पाक हौं ॥

तुलसी गोसायीँ भयो भोँडे दिन भूलि गयो,

ताको फल पावत निदान परिपाक हौं ॥ ४० ॥

असन-बसन-हीन बिषम-बिषाद-लीन,

देकि दीन दूबरो करै न हाय-हाय को ।

तुलसी अनाथसो सनाथ रघुनाथ कियो,

दियो फल सीलसिंधु आपने सुभायको ॥

नीच यहि बीच पति पायि भरुहायिगो,

बिहायि प्रभु-भजन बचन मन कायको ।

तातेँ तनु पेषियत घोर बरतोर मिस,

फूटि-फूटि निकसत लोन रामरायको ॥ ४१ ॥

जियोँ जग जानकीजीवनको कहायि जन,

मरिबेको बारानसी बारि सुरसरिको ।

तुलसीके दुहूँ हाथ मोदक है ऐसे ठावुँ,

जाके जिये मुये सोच करिहैँ न लरिको ।

मोको झूठो साँचो लोग रामको कहत सब,

मेरे मन मान है न हरको न हरिको ।

भारी पीर दुसह सरीरतेँ बिहाल होत,

सोवू रघुबीर बिनु सकै दूर करिको ॥ ४२ ॥

सीतापति साहेब सहाय हनुमान नित,

हित उपदेसको महेस मानो गुरुकै ।

मानस बचन काय सरन तिहारे पाँय,

तुम्हरे भरोसे सुर मैँ न जाने सुरकै ॥

ब्याधि भूतजनित उपाधि काहू खलकी,

समाधि कीजे तुलसीको जानि जन फुरकै ।

कपिनाथ रघुनाथ भोलानाथ भूतनाथ,

रोगसिंधु क्यों न डारियत गाय खुरकै ॥ ४३ ॥

कहौँ हनुमानसौँ सुजान रामरायसौँ,

कृपानिधान संकरसौँ सावधान सुनिये ।

हरष विषाद राग रोष गुन दोषमयी,

बिरची बिरंचि सब देखियत दुनिये ।

माया जीव कालके करमके सुभायके,

करैया राम बेद कहैँ साँची मन गुनिये ।

तुम्हतेँ कहा न होय हाहा सो बुझैये मोहि,

हौँ हूँ रहोँ मौन ही बयो सो जानि लुनिये ॥ ४४ ॥

॥ इति शुभम् ॥